हर साइडसीन्स को साक्षी होकर देखते चलो, अशरीरी होकर उड़ते चलो

आज विशेष बापदादा के पास मीठी दादी जी के सन्देश के प्रति पहुँची तो बापदादा बहुत-बहुत स्नेह और शक्तिशाली रूप से नयन मिलन मना रहे थे। और बोले बच्ची, आपकी दुनिया का क्या हाल है! क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा, अर्थक्वेक अपना जलवा दिखा रही है। बाबा बोले – बच्ची, प्रकृति को अपना कार्य करना ही है क्योंकि ड्रामा में प्रकृति का भी विशेष पार्ट है। बापदादा ने तो पहले ही कहा है कि अब तक तो एक-एक तत्त्व अपना पार्ट बजाने की रिहर्सल कर रहे हैं। अभी तो आगे चल रीयल होना है। अभी तो अलग-अलग हरेक तत्त्व कब कोई, कब कोई अपना रूप दिखा रहे हैं लेकिन आगे तो पाँचों ही तत्त्व इकट्ठा अपना पार्ट बजायेंगे। इसलिए बापदादा बार-बार बच्चों को कहते हैं कि सदा अंगद मिसल अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहो। यह सब साइड सीन्स हैं उसको साक्षी होकर देखते चलो। अशरीरी होकर उड़ते चलो। समय अनुसार अभी तो बच्चों को स्व-चिन्तन, स्व-मान, स्व-स्वरूप में ही रहना है। स्व को डबल लाईट बनाए उड़ते रहो। विशेष अब अशरीरी स्टेज में रहने का अभ्यास अति आवश्यक है।

बाकी गुजरात के बच्चों को विशेष याद देना। बापदादा तो बच्चों की छत्रछाया है ही। सभी ने अपना-अपना अवस्था अनुसार अच्छा पार्ट बजाया। अब भविष्य शक्तिशाली स्टेज को बनाना है। यही अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ करना है। बाकी सब गुजरात के बच्चों को परीक्षा में पास होने की मुबारक है। सदा खुश रहो, आबाद रहो, परीक्षाओं में पास रहो।

ऐसे कहते बापदादा ने सभी देश-विदेश के बच्चों प्रति बहुत-बहुत यादप्यार दिया और यही वरदान दिया कि सदा मंजिल पर उड़ते रहना, रुकना नहीं। बापदादा के साथ उमंग-उत्साह से उड़ते रहना, सदा आगे से आगे बढ़ते रहना। यह था बाबा का सन्देश।